हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन
और
आजीविका सुधार परियोजना (JICA वित्तपोषित)

अंक :12, जुलाई 2024

संवाद पत्र

(JICA श्रीलंका की टीम द्वारा 19-20 जून 2024 को हिमाचल का दौरा)

इस अंक में...

- आत्मनिर्भरता से आजीविका सुधार के शिखर पर वानिकी परियोजना
- मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 6 अप्रैल को संभाला कार्यभार
- वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 79.50 करोड़ का बजट पारित
- वानिकी परियोजना ने किया कंपनी का गठन
- रोहडू व नेरवा में भी बिकेंगे वानिकी परियोजना के हिम ट्रेडिशन उत्पाद
- किन्नौर में रोपे 105 हेक्टेयर भूमि पर चिलगोजे के पौधे
- मुख्य परियोजना निदेशक ने लिया प्रोजेक्ट कार्यों का फीडबैक
- काजा में जल्द तैयार होगा मार्केटिंग आउटलैट
- किन्नौर के चांगो में पौधरोपण व पेयजल समस्या पर हुआ मंथन
- मुख्य परियोजना निदेशक ने लिया छोल्टू नर्सरी का जायजा
- तरांडा मंदिर के पास खूब बिक रहे औषधीय तेल व आचार
- सैंज नर्सरी में गुणात्मक पौधों की बहतरीन पाठशाला
- कुल्लू के कोट में चिरायता की खेती का सफल डेमोस्ट्रेशन
- नौणी यूनिवर्सिटी के साथ एमओयू
- बलद्वाड़ा के जंगल में लगी आग, परियोजना और वन विभाग की टीम ने बुझाई
- कडू व चिरायता की खेती में परियोजना को मिली कामयाबी
- विलुप्त हो रहे भोजपत्र को परियोजना करेगी जिंदा
- वानिकी परियोजना की नर्सरी से पहाड़ों पर हरियाली की पाठशाला
- श्रीलंका में वानिकी परियोजना का मॉडल बनेगा हिमाचल
- हिमाचल में वानिकी परियोजना का सफल प्रबंधन
- वर्ल्ड हेरिटेज उत्सव में दिखी पारंपरिक परिधानों की झलक
- स्वयं सहायता समूह व ग्राम वन विकास समीति की जुबानी
- वानिकी परियोजना से शीत मरुस्थल में आ रही हरियाली
- मीडिया में हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना
- विदाई समारोह

मुख्य संसदीय सचिव श्री सुन्दर सिंह ठाकुर ने वर्ल्ड हेरिटेज उत्सव का शुभारंभ किया।

रोहडू में तैयार हुआ वानिकी परियोजना का मार्केटिंग आउटलैट।

आत्मनिर्भरता से आजीविका सुधार के शिखर पर वानिकी परियोजना...

वर्ष 2018 में आई हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना जल, जंगल और जमीन को बचाने के साथ–साथ सामुदायिक विकास एवं आजीविका सुधार के लिए कार्य कर रही है। आज वानिकी परियोजना आत्मनिर्भरता से आजीविका सुधार के क्षेत्र में शिखर पर पहुंच चुकी है। परियोजना का मुख्य लक्ष्य हिमाचल प्रदेश में सतत् सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए वन क्षेत्रों द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं में सुधार किया जाना है। वर्ष 2022 में जिला कांगड़ा को भी इस परियोजना में शामिल किया गया। अब यह परियोजना हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों किन्नौर, शिमला, बिलासपुर, मंडी, कुल्लू, लाहौल–स्पीति और कांगड़ा के 9 वन वृत्तों, 22 वन मंडलों, 72 वन परिक्षेत्रों में कार्यान्वित की जा रही है। हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना के अंतर्गत प्रदेश में 400 ग्राम वन विकास समितियां और 60 जैव विविधता समितियां हैं। इनके अंतर्गत 920 स्वयं सहायता समूहों द्वारा आजीविका कमाने के लिए उनके कदम बढ़ते जा रहे हैं। मशरूम की खेती, पत्तल का कारोबार, हथकरघा एवं बुनकर, सिलाई–कढ़ाई और मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण, ऑर्गेनिक उत्पादों को बढ़ावा देना, ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण करने सहित कई गतिविधियां चल रही हैं। इसके साथ–साथ हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना द्वारा प्रदेश में 66 वन परिक्षेत्र और 6 वन वृत्त स्तर पर विकसित नर्सरियों में 55 से अधिक पेड़ों की प्रजातियों के पौधे तैयार किए जा रहे हैं। अपनी ही नर्सरी में तैयार हुए पौधों को सामुदायिक तौर पर पौधरोपण करना सर्वोच्च प्राथमिकता है। परियोजना के माध्यम से ग्रामीणों की आर्थिकी में निरंतर सुधार करने के प्रयास किए जा रहे हैं। आजीविका सुधार के क्षेत्र में औषधीय पौधों के 24 मॉडल पर कार्य चल रहे हैं। इस क्षेत्र में आजीविका कमाने के लिए स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं। विभिन्न स्वयं सहायता समूहों द्वारा क्लस्टर स्तर पर जड़ी–बूटियां जिनका चिकित्सकीय क्षेत्र में महत्व है, व्यावसायिक महत्व की कुछ प्राथमिकता वाली प्रजातियों का चयन करके वन एवं निजी भूमि पर उनकी खेती की जा रही है। जिनमें मुख्यतः शतावरी, एलोवेरा, तेज पत्ता, कडू, चिरायता इत्यादि हैं। इसके अतिरिक्त जड़ी–बूटी प्राकोष्ठ द्वारा हरड़, आंवला, रीठा, मोरिंगा व टौर के पत्तों की प्लेट बनाना, पेरिस पॉलीफिया यानी सतुआ के प्रसार के लिए प्रकंद और एसपेरेगस रेसमोसस यानी शतावरी की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है।

चीड़ की पत्तियों के उत्पाद तैयार कर बेचना भी शुरू कर दिया है। चीड़ की पत्तियां अब बेकार न होकर इनकी उपयोगिता बढ़ गई है। जंगलों में चीड़ की सूखी पत्तियों से अग्निकांड की घटनाओं में भी कमी आएगी। मेरी टीम ने 28 मई से 4 जून 2024 तक स्पीति और 20 से 24 जून तक जिला शिमला के दूरदराज क्षेत्र डोडरा–क्वार का दौरा किया। गत 19 और 20 जून 2024 को जाइका श्रीलंका की टीम धर्मशाला और पालमपुर दौरे पर पहुंची तो उन्होंने हिमाचल में हो रहे कार्यों की सराहना की। यहां के सफल प्रबंधन को देखते हुए श्रीलंका में हिमाचल प्रदेश मॉडल बनने जा रहा है। आने वाले समय में भी हिमाचल जैसे छोटे राज्य में वानिकी परियोजना के माध्यम से महिलाएं सशक्त बनें और आजीविका सुधार के क्षेत्र में मिसाल बनकर उभरें।

शुभकामनाएं एवं धन्यवाद।

श्री समीर रस्तोगी (भा.व.से.)
प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं
मुख्य परियोजना निदेशक

मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 6 अप्रैल को संभाला कार्यभार

भारतीय वन सेवा अधिकारी एवं हिमाचल प्रदेश वन विभाग के प्रधान मुख्य अरण्यपाल श्री समीर रस्तोगी ने गत 6 अप्रैल 2024 को हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना में मुख्य परियोजना निदेशक का कार्यभार संभाला। कार्यभार संभालते ही उन्होंने प्रदेश के सभी फील्ड स्टाफ से वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से सीधा संवाद किया। उन्होंने परियोजना में सेवाएं दे रहे सभी वन मंडलाधिकारी, विषय वस्तु विशेषज्ञ एवं अन्य अधिकारियों से बात की और परियोजना के कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। प्रदेश सरकार ने 5 अप्रैल 2024 को अधिसूचना जारी कर 1988 बैच के भारतीय वन सेवा अधिकारी एवं प्रधान मुख्य अरण्यपाल श्री समीर रस्तोगी को हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक का जिम्मा सौंपा। गौरतलब है कि श्री रस्तोगी 1988 से 2019 तक हिमाचल प्रदेश वन विभाग में विभिन्न पदों पर सेवाएं दे चुके हैं। इस दौरान वह वन मंडलाधिकारी, मुख्य अरण्यपाल, और अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल, मिड हिमालयन परियोजना में क्षेत्रीय परियोजना निदेशक बिलासपुर व वन विकास निगम में उत्कृष्ट पद पर सेवारत थे। उन्होंने फरवरी 2019 से फरवरी 2024 तक केंद्र सरकार की सार्वजनिक उपक्रम राष्ट्रीय कैमिकल्स एंड फर्टीलाइजर लि. मुम्बई में मुख्य सतर्कता अधिकारी के पद पर सेवाएं दीं।

इस तिमाही की मुख्य गतिविधियां :

- 11 मार्च 2024 को फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी पंजीकृत हुई।
- 31 मार्च 2024 को मुख्य परियोजना निदेशक श्री नागेश कुमार गुलेरिया सेवानिवृत हुए।
- 01 अप्रैल से 30 जून 2024 तक 22 स्वयं सहायता समूहों को स्किल बेस्ड ट्रेनिंग (कौशल प्रशिक्षण) दी गई।
- 06 अप्रैल 2024 को श्री समीर रस्तोगी ने मुख्य परियोजना निदेशक का कार्यभार संभाला।
- मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 28 अप्रैल से 4 मई 2024 तक रामपुर, किन्नौर और स्पीति का दौरा किया।
- 07 मई 2024 को हिमाचल कम्यूनिटी लाइवलिहुड्स प्रोड्यूसर कंपनी लि. की पहली निदेशक मंडल की बैठक हुई।
- 10 मई 2024 को दिल्ली में जाइका इंडिया के साथ बैठक हुई, जिसमें मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी, परियोजना निदेशक श्री श्रेष्ठा नन्द शर्मा, कार्यक्रम प्रबंधक श्री विनोद शर्मा और लेखा प्रबंधक श्री दिनेश शर्मा उपस्थित रहे।
- 15 मई 2024 को गवर्निंग बॉडी की बैठक हुई, जिसमें महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।
- मुख्य परियोजना निदेश श्री समीर रस्तोगी ने 20 से 24 मई तक रोहड़ू और डोडरा–क्वार क्षेत्र का दौरा किया।
- 31 मई 2024 को वानिकी परियोजना और डा. वाईएस परमार यूनिवर्सिटी नौणी के साथ औषधीय पौधों के लिए एमओयू हस्ताक्षर हुए।
- 06 जून 2024 को रोहड़ू में परियोजना और वन विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- 19 और 20 जून 2024 को जाइका श्रीलंका की टीम ने प्रदेश के धर्मशाला और पालमपुर का दौरा किया।
- 20 से 25 जून 2024 तक चौपाल वन मंडल और 26 से 30 जून 2024 तक रोहड़ू वन मंडल में ड्रोन सर्वे किया गया।
- 27 से 29 जून 2024 तक रोहड़ू, चौपाल, ठियोग, आनी और नाचन वन मंडलों के विषय वस्तु विशेषज्ञों, क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयकों और वार्ड फेसिलिटेटर्स के साथ परियोजना की गतिविधियों पर वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से चर्चा की गई।

वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 79.50 करोड़ का बजट पारित

हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना की 11वीं गवर्निंग बॉडी मीटिंग 15 मई 2024 को आयोजित हुई, जिसकी अध्यक्षता गवर्निंग बॉडी के चेयरमैन एवं प्रधान सचिव वन डा. अमनदीप गर्ग ने की। सह–अध्यक्ष एवं प्रधान मुख्य अरण्यपाल श्री राजीव कुमार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी, परियोजना निदेशक श्री श्रेष्ठा नंद शर्मा, जैवविविधता विशेषज्ञ डा. एसके काप्टा, अतिरिक्त परियोजना निदेशक श्री डीके विज, गवर्निंग बॉडी के सदस्य और परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला के अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे। बैठक में कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई। बैठक में वित वर्ष 2024–25 के लिए 79.50 करोड़ का वार्षिक बजट पारित किया गया।

वानिकी परियोजना ने किया कंपनी का गठन

हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना ने फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी (हिमाचल कम्यूनिटी लाइवलिहुड्स प्रोड्यूसर कंपनी लि.) का गठन किया। बीते 11 मार्च 2024 को हिमाचल प्रदेश कंपनी एक्ट के तहत रजिस्टर करवाया गया, जिसे 16 मार्च 2024 को विधिवत शुभारंभ भी करवाया गया। ऐसे में अब आने वाले दिनों में परियोजना से जुड़े प्रदेश के स्वयं सहायता समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों की मार्केटिंग एवं बिक्री एचसीएलपीसीएल के बैनर तले होगी।

कंपनी के गठन होने से हिमाचल प्रदेश के लगभग 920 स्वयं सहायता समूहों को उनके उत्पादों को मार्केट में ले जाने में सहायता मिलेगी। कंपनी की पहली निदेशक मंडल की बैठक 7 मई 2024 को वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

मुख्य परियोजना निदेशक ने लिया प्रोजेक्ट कार्यों का फीडबैक

मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 28 अप्रैल से 4 मई 2024 तक स्पीति का दौरा किया। उन्होंने इस दौरान रामपुर, किन्नौर से लेकर स्पीति वन मंडलों में वानिकी परियोजना की गतिविधियों के बारे फीडबैक लिया। 28 मई 2024 को रामुपर वन मंडल में अधिकारियों और परियोजना के कर्मचारियों के साथ बैठक की। उन्होंने कहा कि पौधरोपण के लिए सहायक अरण्यपाल वन रामुपर के साथ ग्राम वन विकास समितियों के साथ हर तिमाही समीक्षा बैठक होनी चाहिए। सहभागिता वन प्रबंधन और विभागीय स्तर पर मिलकर पौधरोपण के साथ–साथ संरक्षण को बढ़ावा देंगे। मुख्य परियोजना निदेशक ने कहा कि इस के साथ–साथ औषधीय पौधों की नर्सरियों व ग्राम वन विकास समितियों की सहभागिता को बढ़ाया जाए। उन्होंने कहा किसी भी स्वयं सहायता समूहों की आजीविका सुधार के लिए मिलकर काम करना होगा और उनके उत्पादों को सब से पहले विभागीय स्तर पर उपयोग किया जाए। उदाहरण के तौर पर हर महीने कोई ने कोई अधिकारी या कर्मचारी सेवानिवृत होते हैं, उस उपलक्ष्य पर स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों का उपयोग किया जा सकता है। जैसे शॉल, स्टाल, मफलर, टोपी, पत्तल, पनीर व मशरूम इत्यादि। मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने सहायक अरण्यपाल वन रामपुर को परियोजना की गतिविधियों पर हरेक तिमाही में समीक्षा बैठक करने के निर्देश दिए।

किन्नौर में सभी घटक पर बेहतर कार्य करने की जरूरत : रस्तोगी

मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 29 अप्रैल 2024 को जिला किन्नौर के रिकांगपिओ में समीक्षा बैठक की। उन्होंने कहा कि वन मंडल किन्नौर वन विभाग के अधिकारियों और वानिकी परियोजना स्टाफ को परियोजना के सभी घटक पर बेहतर कार्य करने के की जरूरत है। किन्नौर की नर्सरियों में पौधों की क्षमता बढ़ाने और इस साल अधिक से अधिक पौधरोपण करने होंगे। मुख्य परियोजना निदेशक ने कहा कि नर्सरियों में गुणात्मक औषधीय पौधे तैयार करने और क्षमता भी बढ़ाने होंगे। हैंडलूम, सिलाई–कढ़ाई, चुल्ली–तेल, ऑर्गेनिक उत्पाद, शहद, आचार–चटनी समेत अन्य उत्पादों की बिक्री के लिए स्थान चिंहित कर गजीबों टैंट लगाना होगा। इसके साथ–साथ हरेक तिमाही में परियोजना की सभी गतिविधियों की समीक्षा बैठक की उसकी रिपोर्ट तैयार होनी चाहिए। मुख्य परियोजना निदेशक ने कहा कि स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार उत्पादों को पहले विभागीय स्तर पर खरीदें।

स्पीति के लरी में कृत्रिम ग्लेशियर बनाने की मांग

वन मंडल स्पीति में जैव विविधता प्रबंधन समिति की उप समिति लरी, पोह व आत्मा, रंगशुंग और लायुल स्वयं सहायता समूह आजीविका संवर्धन गतिविधि एवं सुक्ष्म योजनाओं पर कार्य कर रहे हैं। मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 30 मई 2024 को वन्य प्राणी मंडल स्पीति के ताबो में समीक्षा बैठक की। विभिन्न विषयों पर चर्चा के दौरान जैव विविधता प्रबंधन समिति की उप समिति के प्रतिनिधियों ने पेयजल संकट पर अपनी बात रखी और कृत्रिम ग्लेशियर बनाने बारे परियोजना से मदद की मांग की थी। इस मसले के समाधान हेतु वन मंडलाधिकारी स्पीति संबंधित विभाग को प्रस्ताव भेजे। वन विभाग के अधिकारियों और वानिकी परियोजना स्टाफ को परियोजना के सभी कॉम्पोनेंट्स और स्पीति की नर्सरियों में गुणात्मक औषधीय पौधे तैयार करने होंगे। हमारी टीम ने जब ताबो नर्सरी का निरीक्षण किया तो यहां की स्थिति सही नहीं पाई गई। इसमें

बेहतरीन सुधार की आवश्यकता है। बुनाई, हैंडलूम, ऑर्गेनिक प्रोडक्ट्स और गलीचा तैयार करने के क्षेत्र में स्वयं सहायता समूह अच्छे कार्य कर रहे हैं। **ताबो और डंखर में विभिन्न ग्राम वन विकास समिति और स्वयं सहायता समूहों की मांग थी कि उन्हें एक्सपोजर विजिट पर ले जाया जाए।** इस संदर्भ में जल्द ही निर्णय लिया जाएगा और आने वाले दिनों में एक्सपोजर विजिट पर **वन मंडलाधिकारी** स्पीति के साथ वार्ता करेंगे।

पर्यटन स्थल काजा में तैयार होगा मार्केटिंग आउटलैट

हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना से जुड़े विभिन्न स्वयं सहायता समूहों ने स्पीति के काजा में छरमा की खेती और गलीचा तैयार कर नई पहचान बना दी है। मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 1 मई 2024 को वन्य प्राणी मंडल स्पीति के तहत काजा में विभिन्न जैव विविधता प्रबंधन समिति की उप समिति और स्वयं सहायता समूहों से परियोजना की गतिविधियों पर विस्तृत चर्चा की। वन मंडला धिकारी स्पीति मंदार उमेश जेवरे ने अवगत करवाया कि इस क्षेत्र में छरमा की खेती, बुनाई और गलीचा निर्माण के लिए

स्वयं सहायता समूह काम कर रहे हैं। काजा में ही विक्रय केन्द्र तैयार किया जा रहा है।

पर्यटन क्षेत्र होने के नाते यहां वानिकी परियोजना का एक आउटलैट जल्द खोला जाएगा। इसके लिए वन मंडलाधिकारी स्पीति जल्द ही स्थिति बारे जानकारी देंगे। श्री समीर रस्तोगी ने कहा कि जैव विविधता प्रबंधन समिति की उप समिति के सदस्यों को माइक्रोप्लान के तहत कार्य में तेजी लाने की जरूरत है। यहां विभिन्न स्वयं सहायता समूहों द्वारा निर्मित ग्लीचे, जुराबें, कोटी, गर्म कंबल, सर्दियों के लिए टोपियों को अच्छी कीमत मिले, इसके लिए विक्रय केन्द्र खोलना सुनिश्चित करें।

सिचलिंग व शैगो नर्सरियों की स्थिति पर चिंतित हुए सीपीडी

मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 1 मई 2024 को वन्य प्राणी मंडल स्पीति के शैगो और सिचलिंग नर्सरियों का निरीक्षण किया। इस दौरान यह पाया गया कि यहां औषधीय पौधों और छरमा जैसी प्रजातियों की नर्सरियों को संरक्षण नहीं मिल रहा है। इस मसले पर मुख्य परियोजना निदेशक ने चिंता जाहिर की। उन्होंने वन विभाग के अधिकारियों को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि शैगो नर्सरी में सूख रहे छरमा व अन्य प्रजातियों के

पौधों के रखरखाव के लिए विभाग के अधिकारी एक ठोस नीति तैयार करें। शैगो नर्सरी फार्म के अंदर निर्मित वर्मीकम्पोस्ट शैड को बंद कर इसे एक स्टोर में तबदील करें। इस संदर्भ में वन मंडलाधिकारी स्पीति रिपोर्ट भेजें।

अति-दुर्गम क्षेत्र देमुल में जल भंडारण टैंक बनाने की मांग

मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 2 मई 2024 को स्पीति के अतिदुर्गम जैव विविधता प्रबंधन समिति की उप समिति देमुल का दौरा किया। यहां चल रही परियोजना की गतिविधियों पर विस्तृत चर्चा की और कमेटी के हरेक सदस्यों से सीधा संवाद किया। सदस्यों ने देमुल में जल भंडारण टैंक बनाने, पालतू जानवरों के लिए सुरक्षित भाड़ा, थ्रेशर समेत कई समस्याओं से अवगत करवाया, जो जायज भी हैं। जल भंडारण टैंक के लिए उचित क्षेत्र चयन करें और आने वाले दिनों में समस्याओं का समाधान करेंगे। ऐसे अति दुर्गम क्षेत्र के लोग काफी मेहनती हैं। खास कर महिलाएं जो गलीचा और हैंडलूम का काम कर रही हैं। उनके उत्पादों को मार्केट में अच्छी कीमत मिले इसके लिए परियोजना की टीम बेहतर रास्ता तैयार करेगी।

किन्नौर के चांगो में पौधरोपण व पेयजल समस्या पर हुआ मंथन

मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 3 मई 2024 को जिला किन्नौर के चांगों में परियोजा की गतिविधियों पर मंथन किया। इस दौरान ग्राम वन विकास समिति के सदस्यों ने पौधरोपण के संरक्षण के लिए पानी की समस्या से निजात दिलाने की बात कही। ग्राम वन विकास समिति के सदस्यों ने चांगों में जल भंडारण टैंक निर्माण करने की मांग की ताकि पौधे रोपने के बाद पौधों को पानी की व्यवस्था पूरी हो सके। इस विषय की गंभीरता को समझते हुए वन परिक्षेत्र अधिकारी मालिंग ग्राम वन विकास समिति के सदस्यों को मिलकर एक स्थाई योजना तैयार करें। चांगों में निर्मित वानिकी परियोजना के उत्पादों को एनएच–05 पर गजीबो टैंट में बेचने के वन परिक्षेत्र अधिकारी मालिंग स्वयं सहायता समूहों को 6 मई 2024 को गजीबो टैंट वितरित किए। मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने कहा कि ग्राम वन विकास समिति डुबलिंग की मांग पर स्थानीय लोगों को पौधे वितरित करने होंगे, ताकि वे अपनी–अपनी निजी भूमि पर पौधे रोप सके। यह इसलिए करने का निर्णय लिया क्योंकि इस क्षेत्र में पानी की दिक्क्त है।

मुख्य परियोजना निदेशक ने लिया छोल्टू नर्सरी का जायजा

मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 3 मई 2024 को किन्नौर वन मंडल के छोल्टू स्थित नर्सरियों चिलगोजा, बैमी, रूबिनिया, पॉपुलर समेत अन्य पौधों का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि वन मंडलाधिकारी किन्नौर अरविंद कुमार इस बार अधिक से अधिक पौधे रोपने के लिए लक्ष्य निर्धारित करें। इस दौरान वन विभाग के अधिकारियों ने मुख्य परियोजना निदेशक को नर्सरियों की विस्तृत रिपोर्ट भी सौंपी। छोल्टू में आयोजित एक बैठक के दौरान ग्राम वन विकास समिति रामणी के प्रधान ने मुख्य परियोजना निदेशक के समक्ष अपनी बात रखी। मुख्य परियोजना निदेशक ने कहा कि वन मंडलाधिकारी किन्नौर और परियोजना की टीम ग्राम वन विकास समिति प्रधान की मांगों पर अध्यन करें ताकि कुछ हल निकल सके।

तरांडा मंदिर के पास खूब बिक रहे औषधीय तेल व आचार

जिला किन्नौर के तरांडा मंदिर के पास जगत जननी स्वयं सहायता समूह द्वारा तैयार उत्पादों की बिक्री खूब हो रही है। यहां औषधीय युक्त चुल्ली का तेल और लिंगड के आचार बाजार से उचित दाम पर मिल रहे हैं।

मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 4 मई 2024 को जायजा लिया। उन्होंने कहा कि यहां चुल्ली का तेल, लिंगड का आचार समेत अन्य उत्पादों की बिक्री के लिए गजीबो टैंट दिए जाएंगे, ताकि इनके उत्पादों की अच्छी कीमत मिल सके। मुख्य परियोजना निदेशक ने इससे पहले स्पीति रवाना होते वक्त भी 28 अप्रैल 2024 को स्वयं सहायता समूह से मुलाकात की।

चौरा में जल्द बन कर तैयार होगा मुर्गी फार्म

मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 4 मई 2024 को किन्नौर वन मंडल के तहत ग्राम वन विकास समिति चौरा में लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह के साथ बैठक की। उन्होंने कहा कि लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह द्वारा तैयार उत्पाद काफी सराहनीय है। यहां प्रस्तावित मुर्गी फार्म का निर्माण जल्द से जल्द करने के लिए वन मंडलाधिकारी किन्नौर निगरानी रखें। मुख्य परियोजना निदेशक ने कहा कि क्षेत्रीय तकनीकी समन्वयक स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों की बिक्री के लिए जल्द ही गजीबो टैंट मुहैया करवाएं। उन्होंने कहा कि ग्राम विकास समिति चौरा को औषधीय पौधे रोपकर आजीविका में और सुधार करने की जरूरत है और विभाग के साथ मिलकर औशधीय पौधों को रोपने के लिए प्रस्ताव तैयार करें।

सराहन में पनीर का कारोबार, ओपन मार्केट को दे रहा टक्कर

वन मंडल रामपुर के तहत ग्राम वन विकास समिति ढेऊ शाहधार और लक्ष्मी नारायण स्वयं सहायता समूह द्वारा तैयार उत्पाद काफी सराहनीय हैं। यह स्वयं सहायता समूह ने पनीर के करोबार में बेहतरीन कार्य कर रहा है। जो ओपन मार्केट को कड़ी टक्कर दे रहा है। बताया जा रहा है कि स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार पनीर की मांग इस क्षेत्र में काफी बढ़ रही है। मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 4 मई 2024 को सराहन के समीप विभिन्न स्वयं सहायता समूहों के साथ समीक्षा बैठक की। उन्होंने जय ब्रह्मेश्वर जायका स्वयं सहायता समूह तलारा में सिलाई–कटाई के कार्यों का निरीक्षण किया। इस अवसर पर वन विश्राम गृह सराहन में वन विभाग के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक कर परियोजना के सभी गतिविधियों पर विस्तृत चर्चा की।

सैंज नर्सरी में गुणात्मक पौधों की बहतरीन पाठशाला

वन मंडल ठियोग के तहत सैंज नर्सरी में पौधों की बहतरीन पाठशाला चल रही है। यानी यहां विभिन्न प्रजातियों के गुणात्मक पौधे तैयार हो चुके हैं। हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी और परियोजना निदेशक श्री श्रेष्ठा नन्द 24 मई 2024 को नर्सरी फार्म का निरीक्षण करने पहुंचे। उन्होंने नर्सरियों के संरक्षण और रख–रखाव के लिए वन विभाग के कर्मचारियों की पीठ भी थपथपाई। इस मौके पर वन मंडलाधिकारी ठियोग डा. मनीष रामपाल समेत परियोजना और वन विभाग के कर्मचारी मौजूद रहे। मुख्य परियोजना निदेशक ने सैंज नर्सरी का निरीक्षण उस समय किया जब वे रोहड़ू के दूर दराज क्षेत्र डोडरा–क्वार दौरे से वापस शिमला की ओर आ रहे थे। इस दौरान मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने रोहड़ू वन मंडल के तहत चल रही गतिविधियों का जायजा लिया। खड़ापत्थर में शक्ति स्वयं सहायता समूह और ग्राम वन विकास समिति पराली के सदस्यों से संवाद किया। यहां महिला स्वयं सहायता समूह ने उनके द्वारा तैयार मशरूम, बड़ी, सीरा, गेहूं की नमकीन समेत अन्य उत्पादों को मुख्य परियोजना निदेशक के समक्ष प्रस्तुत किया। इस दौरान श्री समीर रस्तोगी ने मशरूम कल्टिवेशन सेंटर का जायजा लिया। उसके पश्चात जुब्बल वन परिक्षेत्र के अंतर्गत सनाभा नर्सरी का औचक निरीक्षण भी किया। उन्होंने औषधीय पौधे तैयार करने और अन्य प्रजातियों के पौधों की क्षमता और गुणवत्ता बढ़ाने के निर्देश दिए।

कुल्लू के कोट में चिरायता की खेती का सफल डेमोस्ट्रेशन

वन्य प्राणी मंडल कुल्लू के कोट में वानिकी परियोजना ने औषधीय पौधे चिरायता की खेती का सफल डेमोस्ट्रेशन का आयोजन किया। परियोजना के विशेषज्ञों ने 11 जून 2024 को जैव विविधता प्रबंधन समिति की उप समिति लोट के तहत कोट में ग्रामीणों को चिरायता की खेती के बारे महत्वपूर्ण जानकारी दी। वानिकी परियोजना के जैव विविधता विशेषज्ञ डा. एसके काप्टा और हिमालयन रिसर्च ग्रुप के निदेशक डा. लाल सिंह ने जैव विविधता प्रबंधन समिति की उप समिति को चिरायता की खेती के लिए बिजाई से लेकर रख रखाव और हार्वेस्टिंग के तरीकों से अवगत करवाया और बिजाई का डेमोस्ट्रेशन दिया। डा. एसके काप्टा ने चिरायता के संरक्षण, बीमारियों से बचाव से लेकर सभी प्रकार की बेहतरीन जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इस खेती को तैयार होने में 18 महीने लग जाते हैं। इस तरह के औषधीय पौधों की खेती कर ग्रामीणों को आत्मनिर्भता से आजीविका सुधार करने का मौका मिलेगा। डा. काप्टा ने कहा कि वानिकी परियोजना इस क्षेत्र में बेहतरीन कार्य कर रही है और वन मंडलाधिकारी वन्य प्राणी कुल्लू की टीम के कार्य भी काफी सराहनीय हैं। उन्होंने जैव विविधता प्रबंधन समिति की उप समिति लोट के ग्रामीणों को चिरायता की खेती की ओर अग्रसर होने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर वन मंडलाधिकारी वन्य प्राणी कुल्लू राजेश शर्मा, सहायक अरण्यपाल वन कुल्लू राजेश ठाकुर, विषय वस्तु विशेषज्ञ कुल्लू प्रिया ठाकुर, वन परिक्षेत्राधिकारी वन्य प्राणी कुल्लू रमेश कुमार और जैव विविधता प्रबंधन समिति की उप समिति लोट के प्रधान दीपी सिंह मौजूद रहे।

परियोजना और नौणी विश्वविद्यालय के बीच एमओयू हस्ताक्षर

डा. वाईएस परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना को औषधीय पौधों की सप्लाई करेगा। बीते 31 मई 2024 को परियोजना मुख्यालय शिमला में मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी की अध्यक्षता में नौणी विश्वविद्यालय के निदेशक शोध के साथ एमओयू हस्ताक्षर किए। एमओयू के मुताबिक आंवला, हरड़, रीठा और बेहडा के ग्राफटेड पौधों की सप्लाई आगामी तीन वर्षों के लिए होगी। इस अवसर पर परियोजना निदेशक श्रेष्ठा नंद शर्मा, जैवविविधता विशेषज्ञ डा. एसके काप्टा और नौणी यूनिवर्सिटी के अधिकारी मौजूद रहे।

बलद्वाड़ा के जंगल में लगी आग

परियोजना और वन विभाग की टीम ने बुझाई

हिमाचल प्रदेश में मई और जून के महीने में फायर सीजन चरम पर था और हर रोज सौ से अधिक घटणाएं सामने आ रही थी। फोरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया के फायर अर्ल्ट पोर्टल से सैटेलाइट के द्वारा आग लगने की घटणाएं चिन्हित होती हैं। जिला मंडी के बलद्वाड़ा वन परिक्षेत्र के तहत बैरकोट जंगल में भीषण आग लगने की सूचना उस वक्त मिली जब 18 मई 2024 की सुबह ग्राम वन विकास समिति सरोवा की बैठक चल रही थी। उसी वक्त ग्राम वन विकास समिति के सभी सदस्य एक किलोमीटर पैदल चल कर मौके पर पहुंचे। वानिकी परियोजना और वन विभाग की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद आग बुझाने में सफलता हासिल की।

वन मंडल सुकेत के तहत वानिकी परियोजना में सेवारत हिमाचल प्रदेश वन सेवा से सेवानिवृत अधिकारी वीपी पठानिया, विषय वस्तु विशेषज्ञ सुकेत विजय कुमार, ग्राम वन विकास समिति सरोवा के प्रधान रोशन लाल की टीम मौके पर पहुंची। टीम के सदस्यों ने बताया कि कई घंटों तक मशक्कत के बाद आग बुझाई। बता दें कि फायर सीजन के दौरान आग पर काबू पाने के लिए वन विभाग और वानिकी परियोजना की टीम हर वक्त मुस्तैद है। वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक समीर रस्तोगी ने जंगलों में आग पर काबू पाने के लिए परियोजना और वन विभाग की टीम के कार्यों की सराहना की।

कड़ू व चिरायता की खेती में परियोजना को मिली कामयाबी

प्रदेश में विलुप्त होते औषधीय पौधे कड़ू और चिरायता की खेती कर हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना ने पहली कामयाबी हासिल की। जिला मंडी के नाचन वन मंडल के तहत छैन मैगल, बुखरास और रोहाल गांव से संबंध रखने वाली महिलाओं के एक समूह ने उक्त दो औषधीय प्रजातियों की पहली खेप उतार दी। हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने नाचन वन मंडल के धंगयारा परियोजना से जुड़े महिला समूह को इस खेती के लिए बधाई दी।

उन्होंने कहा कि विलुप्त हो रहे ऐसी प्रजातियों की खेती कर मिसाल कायम की है। कड़ू और चिरायता की खेती करने के बाद अब महिला समूह को पैसे मिलने भी शुरू हो गए हैं। बाज़ार में इन औषधीय गुणों वाले कड़ू और चिरायता की मांग दिन–प्रति दिन बढ़ रही है। आने वाले समय में हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना इस पर और अधिक काम करेगी। मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने कहा कि वानिकी परियोजना हिमाचल में सामुदायिक विकास एवं आजीविका सुधार के लिए कार्य कर रही है।

विलुप्त हो रहे भोजपत्र को परियोजना करेगी जिंदा

हिमाचल प्रदेश में विलुप्त हो चुके भोजपत्र को जिंदा करने के लिए वानिकी परियोजना कार्य करेगी। हिमालयन फोरेस्ट रिसर्च इंस्टीच्यूट के सहयोग से इस वर्ष से भोजपत्र पर काम शुरू होगा। इसके लिए वानिकी परियोजना ने पूरा प्लान तैयार कर दिया है। हाल ही में वानिकी परियोजना की कार्यकारी समिति यानी ईसी की 18वीं बैठक में यह निर्णय लिया गया। जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ ने दो अतिरिक्त मॉडल तैयार कर दिए हैं, जिसपर जल्द ही कार्य शुरू होंगे। बुरांश, वाइल्ड मैरीगोल्ड और सतुवा पर काम होगा। जिससे स्वयं सहायता समूह उत्पाद तैयार कर अपनी आर्थिकी कमा सकेंगे। हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना अब मेले का आयोजन भी करेगी। जिसमें स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार हर तरह के उत्पादों की प्रदर्शनी के साथ-साथ बिक्री की जाएगी।

-आरपी नेगी,
मीडिया स्पेशलिस्ट।
जाइका वानिकी परियोजना

वानिकी परियोजना की नर्सरी से पहाड़ों पर हरियाली की पाठशाला

हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना की नर्सरी से हिमाचल में हरियाली की पाठशाला चल रही है। ताकि प्रदेश में गुणवत्तायुक्त पौधे तैयार कर उसे बेहतर तरीके से रोपा जा सके। परियोजना के अंतर्गत प्रदेश में 66 वन परिक्षेत्र और 6 वन–वृत्त स्तर पर विकसित नर्सरियों में 55 से अधिक पेड़ों की प्रजातियों के पौधे तैयार किए जा रहे हैं। चिलगोजा, छरमा, देवदार, बान, तोष समेत 55 पेड़ों की प्रजातियों वाले पौधे उक्त नर्सरियों में उपलब्ध हैं। वानिकी परियोजना के माध्यम से इन नर्सरियों की क्षमता लगभग 80 लाख पौधे की बढ़ोतरी की गई है। गत वर्ष लगभग 44 लाख पौधे तैयार किए गए हैं। कुल मिलाकर वानिकी परियोजना के तहत चल रही नर्सरियां अपने आप में एक मिसाल बन चुकी है। प्रदेश के हर जलवायु में रोपने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले पौधे तैयार किए जा रहे हैं। यह प्रयास हिमाचल में हरित आवरण को वर्ष 2030 तक 30 प्रतिशत बढ़ाने के लिए ही परियोजना का अहम योगदान है। उल्लेखनीय है कि वानिकी परियोजना के तहत तैयार की जा रही पौधे की प्रजातियों तथा बुनियादी ढांचों के संबंध में बेहतर सुधार भी किए जा रहे हैं। बताया गया कि वानिकी परियोजना के तहत चल रही नर्सरियों में अत्याधुनिक तकनीक द्वारा पौधे तैयार किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त उक्त सभी नर्सरियों में पौधों का पानी की बेहतर सुविधाएं, केचुआ खाद, ग्रीन हाउस, इंटरलिंक चेन, फेंसिंग इत्यादी की सुविधा भी परियोजना से प्रदान की गई है ताकी गुणवत्तापूर्ण पौधे नर्सरियों में तैयार हो सके।

- डॉ. कौशल्या कपूर,

श्रीलंका में वानिकी परियोजना का मॉडल बनेगा हिमाचल

आरपी नेगी, मीडिया स्पेशलिस्ट

हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना के उत्कृष्ट कार्य देखने के लिए जाइका श्रीलंका की टीम हिमाचल पहुंची। आजीविका सुधार, महिला सशक्तिकरण, स्वरोजगार समेत अन्य क्षेत्रों में हुए कार्यों को हिमाचल की तर्ज पर श्रीलंका में काम होगा। यह बात 19 और 20 जून 2024 को श्रीलंका के विभिन्न मंत्रालयों से हिमाचल दौरे पर पहुंचे प्रतिनिधियों ने कही। भारत का पड़ोसी राष्ट्र श्रीलंका के विभिन्न मंत्रालयों के 10 प्रतिनिधि और जाइका इंडिया की प्रोजेक्ट फॉर्मूलेशन एडवाइजर इनागाकी युकारी दो दिवसीय हिमाचल दौरे पर आए थे। यह टीम धर्मशाला पहुंची, जहां परियोजना के मुख्य निदेशक समीर रस्तोगी और परियोजना निदेशक श्रेष्ठा नन्द शर्मा ने स्वागत किया। पीएमयू शिमला और डीएमयू धर्मशाला की टीम भी मौजूद रही। हिमाचल दौरे के पहले दिन श्रीलंका की टीम ने वन मंडल धर्मशाला के करेरी में आयोजित एक कार्यक्रम में शिरकत की। इस दौरान श्रीलंका के प्रतिनिधियों ने कहा कि हिमाचल में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं श्रीलंका की तुलना में अच्छा काम कर रही हैं। हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों में बेहतरीन भागीदारी देख श्रीलंका की टीम ने यहां की महिलाओं की पीठ थपथपाई। उन्होंने यहां उपस्थित विभिन्न स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं एवं ग्राम वन विकास समिति के पुरुष प्रतिनिधियों से सीधा संवाद किया। इस दौरान उन्होंने श्रीलंका में जाइका के तहत हो रहे कार्यों को सांझा किया। जाइका इंडिया की प्रोजेक्ट फॉर्मूलेशन एडवाइजर इनागाकी युकारी ने महिलाओं को सशक्तिकरण और आजीविका सुधार का पाठ पढ़ाया। मुख्य परियोजना निदेशक समीर रस्तोगी ने श्रीलंका की टीम को परियोजना की सभी गतिविधियों से अवगत करवाया। मुख्य अरण्यपाल वन धर्मशाला ई. विक्रम, वन मंडलाधिकारी धर्मशाला दिनेश शर्मा ने भी अपनी बात रखी।

बता दें कि श्रीलंका राष्ट्र के महिला, बाल एवं सामाजिक विकास मंत्रालय की सहायक निदेशक जैयसकारा, फील्ड असिस्टेंट सेनेविराथना प्रियंथा कुमारी, महिला, बाल एवं सामाजिक अधिकारिता विकास अधिकारी सिवाथास थुरका, विकास अधिकारी करियावासम मलाविया अराचिंगे, श्रीलंका के जिला अंपारा के अतिरिक्त जिला सचिव विथानयागम, अमपारा जिला की महिला विकास अधिकारी इदिरीसिंघे, श्रीलंका के राष्ट्रीय एजेंट रत्नायके मुदियांसेलागे, मोनाराग्ला जिला की महिला विकास अधिकारी नकंदलागे डोना, जाइका श्रीलंका से महिला विकास विशेशज्ञ विरासेकेरा, जाइका श्रीलंका की एसोसिएट ऑफिसर इमादुवा विक्रमा अचारिगे और जाइका इंडिया की प्रोजेक्ट फॉर्मूलेशन एडवाइजर इनागाकी युकारी दो दिवसीय हिमाचल दौरे पर थे।

हिमाचल में वानिकी परियोजना का सफल प्रबंधन : इनागाकी

जाइका इंडिया की प्रोजेक्ट फॉर्मूलेशन एडवाइजर इनागाकी युकारी ने हिमाचल में हो रहे कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि हिमाचल में सफल प्रबंधन के मुताबिक हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना चल रही है और श्रीलंका की टीम को दो दिनों तक काफी कुछ सीखने को मिला। इनागाकी ने कहा कि राज्य में हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना की सफलता की कहानी अब श्रीलंका में पढ़ी जाएगी। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में परियोजा से जुड़े सभी स्वयं सहायता समूहों की मेहनत रंग ला रही है और आजीविका सुधार के साथ ही आय सृजन में सफलता मिल रही है।

उन्होंने हिम ट्रेडिशन ब्रांड की भी तारीफ की। संवाद सत्र के पश्चात श्रीलंका की टीम ने जयसिंहपुर वनपरिक्षेत्र के अंतर्गत नर्सरी फार्म शिवनगर का दौरा किया। इस अवसर पर मुख्य परियोजना निदेशक समीर रस्तोगी, परियोजना निदेशक श्रेष्ठा नंद, वन मंडलाधिकारी पालमपुर डा. संजीव शर्मा, सहायक अरण्यपाल वन ओम प्रकाश चंदेल, कार्यक्रम प्रबंधक विनोद शर्मा, डा. कौशल्या कपूर, प्रिया, सेवानिवृत हिमाचल प्रदेश वन सेवा अधिकारी बीएस यादव, विषय वस्तु विशेषज्ञ पालमपुर कृतिका शर्मा, अकाउंटेंट प्रीति वालिया, क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक अनु सूद, शिवानी वालिया समेत वन विभाग और हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना की टीम मौजूद रही।

विश्व धरोहर उत्सव में दिखी पारंपरिक परिधानों की झलक

ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क कुल्लू में हुआ आयोजन

सीपीएस सुंदर सिंह ठाकुर ने सराहे परियोजना के उत्पाद

ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क साईं रोपा कुल्लू में 25 जून को आयोजित विश्व धरोहर उत्सव में पारंपरिक परिधानों की झलक दिखी। हिमाचल प्रदेश वन विभाग की वन्य प्राणी विंग द्वारा आयोजित इस उत्सव में वानिकी परियोजना से जुड़े विभिन्न स्वयं सहायता समूहों ने पारंपरिक वस्त्रों की बिक्री के लिए स्टॉल लगाए। जिसमें किन्नौरी और कुल्लवी शॉल, स्टाल, टोपियां, मफलर और बेबी सेट उपलब्ध थे। इस अवसर पर मुख्य संसदीय सचिव श्री सुंदर सिंह ठाकुर ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने वानिकी परियोजना और विभिन्न स्वयं सहायता समूहों की मेहनत की सराहना की। सुंदर सिंह ठाकुर ने कहा कि परियोजना के तहत प्रदेश के विभिन्न स्वयं सहायता समूहों को आजीविका कमाने का बेहतर मौका मिल रहा है और परियोजना के कार्य काफी सराहनीय हैं। मुख्य संसदीय सचिव ने कहा कि हमारे ग्रामीण समाज को वनों से प्राप्त होने वाली ये सेवाएं दीर्घकाल तक सतत् रूप से प्राप्त होती रहें, इसके लिए जन सहभागिता अति आवश्यक है। सुंदर सिंह ठाकुर ने कहा कि हिमाचल प्रदेश वानिकी

परियोजना के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ आजीविका सुधार की यह किरण विकास कार्यों को और अधिक रोशन करेगी।

वानिकी परियोजना ने दिखाया आत्मनिर्भता का रास्ता : दीपा

हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना के साथ 7 जून 2022 से जुड़े शक्ति स्वयं सहायता समूह जुब्बल की सचिव दीपा दो साल के अनुभव सांझा किए। उन्होंने बताया कि वानिकी परियोजना ने ही हमें आत्मनिर्भरता का रास्ता दिखाया और परियोजना ने हमें मशरूम उत्पादन के लिए 75 प्रतिशत का खर्चा दिया, शेष 25 प्रतिशत समूह ने व्यय किया। वानिकी परियोजना से जुड़ने के बाद धीरे–धीरे आजीविका में सुधार आने लगा और आर्थिकी में भी इजाफा होने लगा। दीपा कहने लगी कि पिछले दो वर्षों से मशरूम का कारोबार करने से यहां की महिलाएं आत्मनिर्भर हुई। अब तक 80 हजार रुपये से अधिक की कमाई हुई। उन्होंने बताया कि उत्पादन बढ़ाने और बेहतर कमाई के लिए हमेशा से परियोजना के उच्च अधिकारी और फील्ड स्टाफ हमें प्रोत्साहित करते हैं।

प्रोजेक्ट शुरू होते ही खुले रोजगार के द्वार : शंकर चौहान

जिला शिमला के अतिदुर्गम क्षेत्र डोडरा–क्वार में भी हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना के आने से रोजगार के द्वार खुल गए। अपने अनुभव को सांझा करते हुए रुपीन ग्राम वन विकास समिति क्वार के प्रधान शंकर चौहान ने बताया कि परियोजना सुचारू रूप से चलती रहेगी तो सथानीय लोगों को बहुत लाभ मिलेगा। शंकर चौहान 11 नवंबर 2021 से ग्राम वन विकास समिति में प्रधान पद पर सेवाएं दे रहे हैं। उनका कहना है कि परियोजना के माध्यम से गांव में विकास कार्य शुरू किए जाते हैं तो युवाओं और बेरोजगारों के लिए रोजगार के अवसर मिलते हैं। अन्य ग्राम वन विकास समितियों को सुझाव देते हुए उन्होंने कहा कि सबका साथ और सबके सहयोग से ही परियोजना के कार्य में तेजी आएगी।

रचना चंदेल (विषय वस्तु विशेषज्ञ)

वानिकी परियोजना

से शीत मरूस्थल में आ रही हरियाली

प्रदेश के शीत मरूस्थल क्षेत्रों में हरियाली लाने के लिए वानिकी परियोजना की पहल का परिणाम सामने आने लगा है। ऐसे में जाहिर है कि इस प्रोजेक्ट से शीत मरूस्थल में हरियाली आने लगी है। जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी यानी हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना के तहत जिला किन्नौर के श्यासो गांव में 76 हजार लीटर की क्षमता वाला सिंचाई जल भंडारण टैंक तैयार किया गया। इस कठिन एवं शीत भौगोलिक परिस्थिति के दायरे में आने वाले इस गांव की जनता के जज्बे को भी सलाम करना होगा। यह इसलिए कि वहां की जनता ने श्रमदान के माध्यम से एक लाख के अतिरिक्त बजट को कवर किया। प्राप्त जानकारी के मुताबिक वानिकी परियोजना के तहत 76 हजार लीटर वाटर स्टोरेज टैंक निर्माण कार्य पूरा करने के लिए 6 लाख रुपये का खर्चा आया। वानिकी परियोजना की ओर से 5 लाख का बजट दिया गया और एक लाख का काम वहां के स्थानीय लोगों ने श्रमदान के माध्यम से किया। ऐसे में अब इस क्षेत्र में जल भंडारण टैंक के होने से पौधरोपण के बाद उन्हें सींचने में पानी की कमी नहीं सताएगी।

इसके साथ–साथ इस वाटर स्टोरेज टैंक का लाभ वहां के लोगों की भूमि सुधार में भी मिलेगा। यही नहीं, बल्कि यहां कृषि योग्य भूमि पर कृषि भी हो पाएगी। वानिकी परियोजना के माध्यम से जल भंडारण टैंक बना तो लोगों ने खेतों तक सिंचाई जल की सप्लाई के लिए कुहलों का निर्माण भी कर दिखाया।

> **"हाल ही में हमारी टीम ने जिला किन्नौर के श्यासो गांव में निर्मित 76 हजार लीटर की क्षमता के जल भंडारण टैंक का निरीक्षण किया। वानिकी परियोजना के तहत क्षेत्र में हो रहे विकास कार्यों से यहां के लोगों में काफी उत्साह हैं और लोगों को लाभ मिल रहा है। दूरदराज गांव श्यासो में वाटर स्टोरेज टैंक के निर्माण होने से यहां के किसान एवं बागवानों को सिंचाई की बेहतर सुविधा मिल रही है।"**

डा. एसके काप्टा, वानिकी एवं जैव विविधता विशेषज्ञ

मीडिया में हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना

श्रीलंका में जाइका प्रोजेक्ट का मॉडल बनेगा हिमाचल

बशकोला में 21 दिवसीय कार्यशाला में बुनाई के गुर सीखे

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत की स्वयं सहायता समूह बशकोला की 21 दिन की कार्यशाला का हुआ समापन

कुल्लू के कोट में चिरायता की खेती का सफल डेमोस्ट्रेशन

दिव्य हिमाचल

चायल मेले में महकी स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों की खुशबू

aadarshhimachal.com

जाइका: पड़ोसी देश में पढ़ी जाएगी स्वयं सहायता समूहों की सफलता की कहानी

श्रीलंका में बजेगा हिमट्रेडिशन ब्रांड के उत्पादों का डंका

सशक्तिकरण की मिसाल बन रही स्पीति की महिलाएं

गुड न्यूज: दो दिवसीय दौरे पर धर्मशाला और पालमपुर पहुंचा श्रीलंका का प्रतिनिधिमंडल

श्रीलंका में जाइका प्रोजेक्ट का मॉडल बनेगा हिमाचल

महिला सशक्तिकरण सीखेगा श्रीलंका का प्रतिनिधिमंडल

पुनीत शर्मा, धर्मशाला

पहाड़ों की महिलाओं से महिला सशक्तिकरण के गुर सीखने के लिए श्रीलंका का एक प्रतिनिधिमंडल धर्मशाला पहुंचेगा। बताते चलें कि ये डेलीगेशन बुधवार को गग्गल एयरपोर्ट पहुंचेगा तथा इसका ध्येय ... सहायता समूह कई उत्पाद तैयार कर रहे हैं तथा इनमें आचार, बड़ीया, झाड़ु, घी, मशरूम का आचार, बैग, तकिए आदि कई उत्पाद शामिल हैं।

धर्मशाला के अलावा ये दल पालमपुर तथा जोगिंद्रनगर में भी आयोजित पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन तथा जीवंतता के प्रशिक्षण के लिए धर्मशाला पहुंचेगा।

10 सदस्यीय यह डेलीगेशन जाइका इंडिया की परियो... निर्माण सलाहकार इनागाकी यु... के साथ परियोजना स्थलों का ...

उपलब्धि: श्रीलंका में जाइका प्रोजेक्ट का मॉडल बनेगा हिमाचल, धर्मशाला और पालमपुर पहुंचे 11 प्रतिनिधि

पड़ोसी राष्ट्र में प्रदेश की महिलाएं बनेगी सशक्तिकरण का उदाहरण

- दो दिन तक प्रदेश में रहेगी श्रीलंका प्रतिनिधियों की टीम

प्रदेश की महिलाओं के कार्य को सराहा

कुल्लू के कोट में चिरायता की खेती का सफल डेमोस्ट्रेशन

आपका फैसला — हिमाचल

जैव विविधता विशेषज्ञ डा. एसके काप्टा ने ग्रामीणों को दिए बेहतर खेती के टिप्स

अच्छी खबर: पड़ोसी देश में पढ़ी जाएगी स्वयं सहायता समूहों की सफलता की कहानी

अब श्रीलंका में भी बजेगा हिमट्रेडिशन ब्रांड के उत्पादों का डंका

- हिमाचल दौरे पर आई जाइका की टीम ने खरीदे ऑर्गेनिक उत्पाद

आज समाज नेटवर्क

जाइका वानिकी परियोजना से जुड़े तीन स्वयं सहायता समूहों ने लगाए स्टाल

HPJICAPHPFEML Posts

Jica Pihpfeml

#jicaindia #jicaforestryproject #SukhvinderSukhu

वर्ल्ड हेरिटेज उत्सव में दिखी पारंपरिक परिधानों की झलक

June 25, 2024

हिम न्यूज़,कुल्लू। ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क साईं रोपा कुल्लू में आयोजित वर्ल्ड हेरिटेज उत्सव में पारंपरिक परिधानों की झलक दिखी। हिमाचल प्रदेश वन विभाग की वाइल्ड लाइफ विंग द्वारा आयोजित इस उत्सव में जाइका वानिकी परियोजना से जुड़े विभिन्न स्वयं सहायता समूहों ने पारंपरिक वस्त्रों की बिक्री के लिए स्टॉल लगाए। जिसमें किन्नौरी और कुल्लवी शॉल, स्टाल, टोपियां, मफलर और बेबी सेट उपलब्ध थे। इस अवसर पर मुख्य संसदीय सचिव सुंदर सिंह ठाकुर ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने जाइका वानिकी परियोजना और विभिन्न स्वयं सहायता समूहों की मेहनत की सराहना की। सुंदर सिंह ठाकुर ने कहा कि जाइका परियोजना के तहत प्रदेश के विभिन्न स्वयं सहायता समूहों को आजीविका कमाने का बेहतर मौका मिल रहा है और परियोजना के कार्य काफी सराहनीय हैं। मुख्य संसदीय सचिव ने कहा कि हमारे ग्रामीण समाज को वनों से प्राप्त होने वाली ये सेवाएं दीर्घकाल तक सतत् रूप से प्राप्त होती रहें, इसके लिए जन ...

Jica Pihpfeml

youtube.com

The chariot of JICA Forestry Project is running on the path of Sri Lanka

youtube.com

Inagaki Yukari, Advisor, Project Formulation Advisor JICA India, appreciated the works in Hi...

विदाई समारोह...

31 मार्च 2024 को मुख्य परियोजना निदेशक श्री नागेश कुमार गुलेरिया सेवानिवृत हुए।

31 मई 2024 को अधीक्षक ग्रेड–वन श्री रमेश चंद बंसल सेवानिवृत हुए।

विस्तृत जानकारी के लिए संम्पर्क करें:-

मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका वानिकी परियोजना

नज़दीक हिमाचल प्रदेश मिल्कफैड कॉर्पोरेशन, टुटू शिमला-11, हिमाचल प्रदेश दूरभाष : 0177-2838217,

ईमेल : cpdjica2018hpfd@gmail.com

वेबसाईट : https://jicahpforestryproject.com

अतिरिक्त परियोजना निदेशक, अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई

जाइका वानिकी परियोजना, कुल्लू। दूरभाष : 1902 -226636, ईमेल: pdjicakullu@gmail.com